"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 02, Issue: 04, July-August 2015 *eISSN NO. 2394-5362*
Impact Factor (IIFS) - 0.776

केदरनाथ सिंह के काव्या में पर्यावरण चेतना

उज्वला गाड़े
हिंदी विभाग
बलभीम कॉलेज
बीड, महाराष्ट्र, भारत

वसुधा सुधा विहिन है, रस विहीन आकाश।
मानवता कहते जिसे, नही मनुज के पास।१

आज चारो तरफ एकही बात सुनने को मिल रही है कि, पानी, पानी और पानी। पानी जीवन देता है, जीवन लेता भी है। मनुष्य ने अपनी सुख - सुविधाओं के लिए बेहिचक, वृक्ष - तोड की है। चारों तरफ सिमेंट के जंगल बढ़ाये है। परिणाम स्वरूप आज पर्यावरण पूरी तरहसे बिघड़ा हुआ नजर आ रहा है। धरती हमारी माँ बनकर हमारा पोषण करती है। लेकिन आज हम उसके ऊपर इतना अत्याचार कर रहे है। इस अत्याचार का नतीजा है, अकाल, बाढ़, भुकंप, सुनामी आदि। जीवन के लिए सुख - साधन देने वाला विज्ञान, बढ़नेवाला औद्योगिकरण जिसके कारण दिन - प्रतिदिन प्रदुषण बढ़ता जा रहा है। जलप्रदुषण, ध्वनिप्रदूषण, हवा प्रदुषण, मिट्टी प्रदूषण चारो तरफ प्रदुषण ही प्रदुषण। वनों का नष्ट होना, पशु - पक्षियां का नष्ट हो जाना, भयंकर बिमारीयों का बढ़ना, और प्राकृतिक आपदाओं का आ जाना यह सब प्रकृति के विरोधी किये गये गतिविधियों का नतीजा है।

प्राचीन काल में हमारे देश में जो तीज - त्योहार, पुजा - पाठ, होम हवन होते थे जिसे धार्मिक आधार था लेकिन इसका प्रमुख उद्देश्य था कि प्रकृति का संतुलन बनाये रखना। उदाः तुलसी, बरगद, पिंपल, आँवला, बेल, गाय, बैल, नदी, सागर, चाँद, सुरज, आकाश, पहाड़, आदि की पूजा। संत कवियों ने अपने साहित्य द्वारा पर्यावरण के बारे में मनुष्य को सचेत करने का प्रयास किया। तुकाराम महाराज कहते है, `वृक्ष वल्ली आम्हा सोयरे`। कबीर जी कहते है, जल में कुंभ कुंभ में जल है बाहरि भीतरि पानी / फूटा कुंभ जल जलहि समाना यहूँ तत कथ्यों गियानी / मीराँबाई ने भी `गिरधर`, `गोपाल` इन शब्दों द्वारा प्रकृति का चित्रण किया है। आधुनिक हिन्दी रचनाकारों ने भी अपनी रचनाओं द्वारा कुछ हद तक पर्यावरण संतुलन बनाये रखने का प्रयास किया है। केदारनाथ सिंह जी की काव्य रचनाओं में हमें प्रकृति का सुंदर चित्रण देखने को मिलता है। यह प्रकृति का सुंदर चित्रण ही हमें पर्यावरण बचाने का संदेश देता है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त कवि केदारनाथ सिंह तीसरे सप्तक के चौथे कवि एवं समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर है। केदारजी का बचपन प्रकृति के सुरम्य वातावरण में बीता, जहाँ पर कि गंगा और सरयू जैसी पवित्र नदियाँ बहती है, और साथ ही बाग-बगीयों और जंगलो का अपना खास दृश्य विद्यमान था। ग्रामीण जीवन और प्रकृति की अमिट छाप केदार जी के बालपन पर पड़ी। जिसका उल्लेख करते हुए स्वयं कवि कहते है, ``चित्रो के प्रति मन में जो आकर्षण है, उसके कुछ कारण हैं। प्रकृति बहुत प्रारम्भ से मेरे भावों का आलम्बन रही है। मेरा घर गंगा ओर घाघरा के बीच है। घर के ठीक सामने एक नाला है जो दोनों को मिलाता है। मेरे भीतर भी कही गंगा और घाघरा की लहरें बराबर टकराती रहती हैं। खुले कछार, मक्का के खेत ओर दूर - दूर तक फैली पगडण्डियों की छाप आज भी मेरे मन पर उतनी ही स्पष्ट है जितनी उस दिन थी, जब मैं पहली बार देहात के ठेट वातावरण से शहर के धुमैले शतशः खण्डित आकाश के नीचे आया।``[२]

कवि केदारजीने अपने काव्य में वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद आदि सभी ऋतुओं का वर्णन किया है। `शरद प्रात` कविता में शरद कालीन प्रातः के प्रसन्न, सून्दर एवं मन मोहक वातावरण की निर्मिति सांकेतिक बिम्ब के माध्यम से की है। कवि अपनी प्रेयसी को आशिष देते हैं कि, उसके जीवन में सदा शरद प्रातः बसी रहे -

शरद तुम्हारे खेतों में सोना बरसाये,
छज्जों पर लौकियाँ चढ़ाये,
पत्ती - पत्ती ओस चुआयें।
मेड़ो - मेड़ो दूब उगाये
शरद तुम्हारे बालों में गुलाब उलझाये।[३]

`नए वर्ष के प्रति` केदारजी की एक प्रकृति की खुशहाली चाहने वाले एक सुंदर कविता है। इसमें उन्होंने नए वर्ष के माध्यम से, नया युग चित्रित करते हुए गाँवो, शहरों, नदी - नालों, एवं जंगलो में खुशहाली लाने का प्रयास किया है। साथ ही साथ नये साल को वह कह रहे कि, तु कैसा होगा और क्या क्या लेके आयेगा। लेखक की आधुनिकता भरी दृष्टि हमारी जिज्ञासा की पूर्ति करने का प्रयास करती है। हर मनुष्य के मनमे नया साल के प्रति जिज्ञासा भी रहती है, और साशंकता भी। इसी बात को चित्रित करते हुए कवि कहते है कि,

``अरे अपरिचित। लाओगे क्या लाओगे।
पूछते हैं घर - दिशाएँ, नदी - नाले, गाँव - जंगल।
लाओगे। क्या लाओगे।``
गन्ध पहले बौर की
या फलों पर चढ़ते सुनहरे रंग।[४]

`जमीन पक रही हैं` काव्य संग्रह की बहुत सी कविताओं में मोहभंग की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है। इस संग्रह की कविता द्वारा कविने आम आदमी को जीवन की उस स्थितियों से परिचित किया है, जो भयावह है मनुष्य को अमानवीयता की ओर ले जाती है। `सूर्य` कविता में समाज के प्रगतिशील तत्वों और मानव के उच्चतर मूल्यों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। यह कविता आम भारतीय आदमी के जीवन का दर्शन कराती है। इस आदमी के पास सुखमय जीवन का कोई भी साधन नहीं है। भयंकर दारिद्रयता भरा जीवन जीते हुए अदम्य उत्साह से वह जीवन में आने वाली बाधाओं से संघर्ष करता है। उसके पास सच्चे जीवन की उष्मा एवं उर्जा अभी भी है। जिसके कारण वह सदैव सूर्य के जैसा चमकता रहता है। आजकी परिस्थिति में यह कविता विशेष महत्व रखती है। कवि कहता है -

``जलती हुई आग
और उँघते हुए किस्सों के बीच
वह एक एक ऐसा जानवर है जो दिन भर
भूसे के बारे में सोचता है
रातभर ईश्वर के बारे में। ``7

`पेड़` कविता में `पेड़ों` की यातनाभरी चुप्पी को अंकित किया गया है। `पेडों` की यातनाभरी चुप्पी` का अंकन गहरे मानव प्रेम का सूचक है। इस चुप्पी से विद्रोह की भावना ज्यादा उत्पन्न होती है। कवि के अनुसार शब्द और आदमी, धमाका किसी शस्त्र से भी ज्यादा रहता है। कवि कविता के माध्यम से विद्रोह की आग भड़काना चाहता है। कवि वैचारिक क्रान्ती ओर मानवता का पक्षधर है। उनका कथन है कोई भी कविता निरर्थक नहीं होती। कविने इस कविता द्वारा यह भी, दिखाने की कोशीश की है कि हम जो कागज उपयोग में लाते है उसके लिए पेड़ तोड़ने पड़ते है। पेड़ तोड़ते समय होंनेवाली यातना का चित्रण कवि ने किया हैं।

``इस कोरे कागज पर तुम जो कुछ लिख रहे हो
उसमें पेड़ों की यातना भरी चुप्पी शामिल है।``8

समय एवं मानवीय मूल्यों के परिवर्तन के कारण प्रकृति का चित्रण भी आज अलग रूपसे हमारे सामने आता है। आज कल हम पूरे साल भर ग्रीष्म को देख रहे है। प्रखर सूर्य रसतत्व का कठोरता से शेषण कर रहा है। धरती तवे सी तप रही है। ताल सरोवर सूख गये है। वृक्ष वनस्पति कुम्हला रहे है। जहाँ अच्छे बड़े पेड़ है वह भी विकास के नामपर तोंड़े जा रहे है। ऐसे लोगों क कवि समझाता है कि पेड़ तोड़ते समय कुछ सोचना जरूरी है -

यदि कही तोड़ ही लेता

``मेरी बस्ती के लोगों की दुनिया में
वह अकेली चीज है /
जिस पर भरोसा किया जा सकता है/
सिर्फ उसपर रोटी नहीं सेंकी जा सकती /``5

कवि ने सामाजिक और आर्थिक मूल्यों के साथ सांस्कृतिक मूल्यों के जतन की चिन्ता को अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है। `बिना नाम की नदी` में कविने मानवीय और सांस्कृतिक संवेदनाओं को चित्रित किया है। नदी का सम्बन्ध गाँव से जूड़ा हुआ होता है। नदी गाँव पर संस्कार करती है। नदी निस्वार्थ - निरपेक्ष प्रेम करना गाँव वालों को सिखाती है। नदी को नाम की आवश्यकता नही है।

``मेरे गाँव को चीरती हुई
पहले आदमी से भी बहुत पहले से
चुपचाप बह रही है वह पतली-सी नदी
जिसका कोई नाम नहीं।``6

कविने `बैल` नामक कविता में आज के विवश किसान का चित्र खिंचा है। आज किसान दूसरों की इच्छा के खातीर जी रहा है। दूसरों के लिए जी रहा है। उसका अपना कुछ भी नहीं है। बैल एवं उसके जैसे व्यक्ति के श्रम, बल और शील की उपेक्षा का प्रमाण है यह कविता। बैल एक परिश्रमी किसान का प्रतीक है। वह आत्म सन्तुष्ट है। उसे सिर्फ भूसे की गंध सताती है। निर्जीव भूसा खाकर वह अन्न का उत्पादन करता है। चारों ओर प्रगति और विकास की बात चल रही है। बैल बेखबर है। वह खेत खलिहान के आगे सोच नहीं, सकता। किसान के जीवन में गाँव, जमीन एवं बैल जैसे परिश्रम के सिवा अन्य कोई विषय नहीं होते हैं। कठिन परिश्रम के बाद भी उसके भाग्य में भूसा ही है।

जब वर्षा शुरू होती है
तब कही कुछ नहीं होता
सिवावर्षा के आदमी और पेड जहाँ पर खड़े थे वहीं पर खड़े रहते है।
सिर्फ पृथ्वी घूम जाती है उस आशय की ओर
जिधर पानी के गिरने की क्रिया का रूख होता है।[११]

केदारनाथ सिंह सर्जन में रत थे उस समय तक गाँव का आदमी प्रकृति से बहुत करीब था। लगभग गाँव की सारी जरूरतें प्रकृति से पूरी हो जाती थी। केदार सिंह गाँव के जीवन से पूरी तरह जुड़े थे, जैसा कि उन्होंने स्वीकार भी यिा है, कि दिल्ली जैसे महानगर में रहते, हुए भी वे गाँव को नहीं भुला पाये है। गाँव के नदी - तालाब, बाग, जंगल, पशु - पक्षी आदि के क्रिया कलाप केदारनाथ सिंह के जीवन में बस गए थे। कवि के शब्दों में,

``आज भरी दोपहरी में। बोलता रहा कौआ
देर तक मैं सुनता रहा। और सहता रहा
मुझे आ रही थी झपकी। पर सोचा - टालो
बोलने भी दो, फिर खुद ही धीरे - धीरे हो जायेगा चुप``[१२]

आज हम देखते हैं कि रास्ते भर दिखाई देने वाले पहाड़ ऐसे खरोंचे जा रहे है। उसे देखकर ऐसा लगता है कि जैसे छोटे बच्चों के चेहरे पर बिल्ली ने अपने नाखून से खरोंचे मारे है। ऐसा लगता है कि खोदे जा रहे पहाड़ होने वाले वेदना से रो रहे है। कवि के शब्दो में

``अन्त में खड़े-खड़े
विराट आकश के जड़ वक्षस्थल पर
वे रख देते हैं अपना सिर
और देर तक सोते हैं
क्या आप विश्वास करेंगे
नींद में पहाड़, रात - भर रोते हैं।``[१३]

यदि कही तोड़ ही लेता
कुछ हरी कच्ची उमगती हुई शाखें
तो उसका क्या होता
जो उनही के नीचे बैठा था
उन्हीं के जादू में
बन्द किये आँखे।[९]

केदारनाथ सिंह एक किसान के घर में जन्मे थे, ओर कृषक के लिए प्रकृति का आकर्षण, जीवन के सुख-दुख व आशा-निराशा से जुड़ कर उत्पन्न होता है। किसान का सुख दुःख और बादल की मनुहार करते हुए केदार जी कहते है -

आगे पुकारेगी सूनी डगरिया
पीछे सुके बन - बेंत
संझा पुकारेगी गीली अखड़ियाँ
भोर हुए धन खेत
आना जी बादल जरूर।[१०]

कवि का बचपन प्रकृति के साथ बीतने के कारण प्रकृति उनके नस-नस में बसी हुई है। वे, अच्छी तरह जानते है कि, प्रकृति के अभाव में मनुष्य अधूरा है। `जब वर्षा शुरू होती है कविता प्रकृति का सुन्दर चित्रण करनेवाली कविता है। इस कविता में वर्षाकालीन दृश्य का बहुत अर्थपूर्ण वर्णन किया गया है। कवि ने इस कविता में सष्ट किया है कि, पृथ्वी के अपने चारों ओर घूमते रहने के कारण विभिन्न ऋतुएँ आती हैं। वर्षा ऋतु आने के कारण पृथ्वी पर दिखाई देने वाले चित्र को कवि प्रस्तुत करते हुए कहते है कि,

"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 02, Issue: 04, July-August 2015 *eISSN NO. 2394-5362*
Impact Factor (IIFS) - 0.776

उन्हें डर है कि एक दिन
नष्ट हो जायेंगे बाघ
कि एक दिन ऐसा आयेगा
जब कोई दिन नहीं होगा
और पृथ्वी के सारे बाघ
धरे रह जायेंगे
बच्चों की किताबों में।१५

केदारनाथ सिंह में आधुनिकता की प्रवृत्ति प्रबल है, इसलिए आधुनिक युग में प्रवर्तित होने वाले बिम्बो के नए स्वरूप की भी रचना उन्होंने अपने काव्य में की है। उनकी `अँधेरे पाख का चाँद` कविता इस बात को स्पष्ट करती है। `चाँद` को अलग ढंगसे कविने प्रस्तुत किया है।

जैसे जेल में लालटेन
चाँद उसी तरह
एक पेड़ की नंगी डाल से झूलता हुआ और हम
यानी पृथ्वी के सारे - के - सारे कैदी खुश
कि चलों कुछ तो है
जिसमें हम देख सकतें हैं
एक - दूसरे का चेहरा।१६

कवि केदारनाथ सिंह का मन मूलरूप से ग्रामीण परिवेश से जुड़ा होने के कारण गाँवे के सन्दर्भ में और मुक्त प्राकृतिक वातावरण का चित्रण ही सिंह जी कवितामें दिखाई देता है। `अभी बिल्कुल अभी` संग्रह में `पतझड की एक शाम`, `सूर्यास्त`, `मार्च की सुबह`, `बादल आओ`, जब वर्षा शुरू हुई, चाँदनी तथा `पपीहा दिन` आदि कविताएँ प्राकृतिक सौन्दर्य से सम्बन्धित है। इसमें कवि का प्रकृति से जुड़ने का प्रयास स्पष्ट दिखाई देता है। जब मनुष्य किसी समस्या से घिरे रहता है, कोई चिन्ता लगी रहती है उस वक्त शांत प्रकृति में भी मनुष्य को समुद्री गर्जना सुनाई देती है। मनुष्य की इसी मानसिकता को चित्रण करते समय कवि कहता है कि,

``सभी ओर से / अन्तरम के किसी कोण पर /
झुका हुआ - सा / सुनता प्रतिपल /
एक समुद्री दस्तक / मन के पर्त-पर्त पर/
धीमें - धीमें ....।``१४

अख़बार खालेते ही पहले पेजपर खबर मिलती है, गाँव में बिबट्या आ गया। बच्चों को, गाय, बैल, बकरी जैसे जानवरों के ऊपर हमला बोल दिया। बिबट्या गाँव में क्यों आया? बिबट्या गाँव में नहीं आया। हमने उनके निवासस्थान नष्ट कर दिये और वहाँ मनुष्य ने बड़ी-बड़ी अट्टालिका खड़ी कर दी। जंगल नष्ट हो गये। परिणाम स्वरूप बिबट्या जैसे प्राणी गाँव में आने लगे। जंगली प्राणीओं की संख्या भी आज इतनी कम हो गयी है कि, कवि के शब्दों में -

कवि ने अपनी कविता में भविष्य के प्रति आशावादी रूख का चित्रण किया है। आज भले ही स्थिति कुछ भी हो लेकिन भविष्य में उसको महत्वपूर्ण भूमिका होगी। `निराकार की पुकार` में भविष्य के प्रति एक निष्ठापूर्वक मंगल कामना और कवि के आस्थापूर्ण दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति हुई है -

``एक नन्हा बीज मै अज्ञात नवयुग का
आह, कितना कुछ - सभी - कुछ - न जाने कया क्या
समुचा विश्व होना चाहता हूँ।
भोर के पहले तुम्हारे द्वार
तुम मुझे देखो न देखो
कल उगूँगा मैं। ``१७

निकर्ष रूप में मैं इतना कहना चाहती हूँ आधुनिक कवि केदारनाथ सिंह जी ने अपनी रचनाओं द्वारा प्रकृति के अलग, अलग उदाहरणों का प्रयोग कर हमें प्रकृति के प्रति सचेत कर दिया है। आज हमें पर्यावरण को बचाना हो और अपनी भावी पीढ़ि को सुंदर भविष्य देना हो तो हमें पर्यावरण चेतना की शुरूआत प्रथम अपने आपसे करनी होगी।

कवि के शब्दों में

``शहर को भूख या जहरीली गैस से जब भी बचाया जा सकता है
अगर सिर्फ यह पता चल जाय
कि सड़क पर जो पहला आदमी मिलेगा
उसका नाम क्या है।``१८

संदर्भ :

१) आधुनिक दोहे - गिरिमोहन गुरू - विना - जनवरी - १९९८

२) केदारनाथ सिंह का काव्यालोक - डॉ. शेरपाल सिंह - पृ. १२

३) तीसरा सप्तक - सं. अज्ञेय - पृ. १४३

४) तीसरा सप्तक - सं. अज्ञेय - पृ. १३४

५) जमीन पक रही है - केदारनाथ सिंह - पृ. १०

६) केदारनाथ सिंह - प्रतिनिधि कविताएँ - पृ. २६

७) जमीन पक रही है - केदारनाथ सिंह - पृ. ३७

८) जमीन पक रही है - केदारनाथ सिंह - पृ. ४२

९) केदारनाथ सिंह - प्रतिनिधी कविताएँ - पृ. २९

१०) तीसरा सप्तक - सं. अज्ञेय - पृ. १४

११) जमीन पक रही है - केदारनाथ सिंह - पृ. २७

१२) केदारनाथ सिंह - प्रतिनिधी कविताएँ - पृ. ५९

१३) केदारनाथ सिंह - प्रतिनिधी कविताएँ - पृ. २३

१४) केदारनाथ सिंह के काव्य की गवेषणा - डॉ. मारोती संगळे - पृ. ७४

१५) केदारनाथ सिंह - प्रतिनिधी कविताएँ - सं. परमानंद श्रीवास्तव पृ. १४७

१६) केदारनाथ सिंह - प्रतिनिधी कविताएँ - सं. परमानंद श्रीवास्तव पृ. ११९

१७) तीसरा सप्तक - सं. अज्ञेय पृ. १५७.

१८) केदारनाथ सिंह का काव्यालोक - डॉ. शेरपाल सिंह पृ. ५३

कवि केदारनाथ सिंह - भारत यायावर, राजा खुगशाल

केदारनाथ सिंह के काव्य में बिम्ब विधान, डॉ. गीता अस्थाना